"रस के अवयव"

काव्य को पढ़ते या सुनते समय हमें जिस आनन्द की अनुभूति होती है, उसे ही रस कहते हैं। जिस प्रकार प्राण के बिना शरीर व्यर्थ है, उसी प्रकार रस के अभाव में कोई रचना काव्यत्व से ही रहित होती है। रस ही कविता को प्राणवान बनाता है और पाठक या श्रोता को आनन्दमय करके भाव समाधि में पहुँचाता है। इसलिए रस को काव्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व माना गया है। रस काव्य का अंतरंग तत्व है, बहिरंग नहीं। रस के चार अवयव हैं— (1) स्थायी भाव, (2) विभाव, (3) अनुभाव, और (4) संचारी या व्यभिचारी भाव।

स्थायी भाव —

जो भाव हृदय में सदैव स्थायी रूप में विद्यमान रहते हैं, किन्तु अनुकूल कारण पाकर उद्बुद्ध होते हैं, उन्हें स्थायी भाव कहा जाता है। इनकी संख्या नौ मानी गई है। प्रत्येक स्थायी भाव से सम्बन्धित एक रस होता है, जिसका विवरण निम्न प्रकार है—

	रस का नाम	वर्ण (रंग)	स्थायी भाव
(i)	शृंगार रस	श्याम	रति भाव
(ii)	वीर रस	गौर/हेम	उत्साह
(iii)	रौद्र रस	लाल/रक्त	क्रोध
(iv)	वीभत्स रस	नील	जुगुप्सा
(v)	अद्भुत रस	पीत	विस्मय
(vi)	शान्त रस	धवल	निर्वेद

(vii) हास्य रस — श्वेत — हास
(viii) भयानक रस — कृष्ण — भय
(ix) करुण रस — कपोत — शोक

इनके अतिरिक्त दो रसों की चर्चा और होती है — वात्सल्य रस एवं भक्ति रस। लेकिन स्थायी भावों की संख्या नौ ही मानी गई है, इसलिए 'नौ रस' ही माने गए हैं। ये दोनों रस शृंगार रस के अन्तर्गत आयेंगे। इसलिए रति भाव के तीन भेद माने जा सकते हैं — दाम्पत्य रति (शृंगार रस), वात्सल्य रति (वात्सल्य रस) और भक्ति संबन्धी रति (भक्ति रस)। इन तीनों से क्रमशः शृंगार रस, वात्सल्य रस एवं भक्ति रस की निष्पत्ति होती है।

विभाव —

'विभाव' का अर्थ है 'कारण'। जिन कारणों से सहृदय सामाजिक के हृदय में स्थित स्थायी भाव उद्बुद्ध होता है, उन्हें विभाव कहते हैं। विभाव के दो भेद होते हैं —

(i) आलम्बन विभाव —

जिसके कारण आश्रय के हृदय में स्थायी भाव उद्बुद्ध होता है, उसे आलम्बन विभाव कहते हैं। जैसे दुष्यन्त के हृदय में शकुन्तला को देखकर 'रति' नामक स्थायी भाव उद्बुद्ध हुआ, तो यहाँ दुष्यन्त आश्रय है एवं शकुन्तला आलम्बन है।

(ii) उद्दीपन विभाव —

ये आलम्बन विभाव के सहायक एवं अनुवर्ती होते हैं। उद्दीपन के अन्तर्गत

आलम्बन की चेष्टाएँ एवं बाह्य वातावरण दो तत्व आते हैं, जो स्थायी भाव को और अधिक उद्दीप्त, प्रबुद्ध एवं उत्तेजित कर देते हैं। जैसे – शकुन्तला की चेष्टाएँ दुष्यन्त के रति भाव को उद्दीप्त करेंगी तथा उपवन, चाँदनी रात, नदी का एकान्त किनारा भी इस भाव को उद्दीप्त करेगा। अतः ये दोनों 'उद्दीपन' हैं।

अनुभाव — 'आश्रय' की चेष्टाएँ अनुभाव के अन्तर्गत आती हैं; जबकि 'आलम्बन' की चेष्टाएँ उद्दीपन के अन्तर्गत मानी जाती हैं। अनुभाव की परिभाषा इस प्रकार दी गई है –

"अनुभावो भाव बोधकः।"

अर्थात् भाव का बोध कराने वाले कारण अनुभाव कहलाते हैं। आश्रय की वे बाह्य चेष्टाएँ जिनसे यह पता चलता है कि उसके हृदय में कौन-सा भाव उद्बुद्ध हुआ है, 'अनुभाव' कहलाती है। अनुभाव चार प्रकार के होते हैं –

(i) कायिक या आंगिक अनुभाव — जो शरीर की चेष्टाओं से प्रकट होते हैं।

(ii) वाचिक अनुभाव — जो वाणी से प्रकट होते हैं।

(iii) आहार्य अनुभाव — जो वेशभूषा, अलंकरण आदि से प्रकट होते हैं।

(iv) सात्विक अनुभाव — सत्व के योग से उत्पन्न

वे चेष्टाएँ जिन पर हमारा वश नहीं होता, सात्विक अनुभाव कही जाती हैं। इनकी संख्या आठ मानी गई है—(i) स्वेद, (ii) कम्प, (iii) रोमांच, (iv) स्तम्भ, (v) स्वरभंग, (vi) अश्रु, (vii) वैवर्ण्य और (viii) प्रलय।

संचारी भाव ——

स्थायी भाव को पुष्ट करने वाले संचारी भाव कहलाते हैं। ये सभी रसों में संचरण करते हैं। इन्हें व्यभिचारी भाव भी कहा जाता है। इनकी संख्या 33 मानी गई है, जो इस प्रकार हैं—— निर्वेद, ग्लानि, शंका, असूया, मद, श्रम, आलस्य, दैन्य, चिन्ता, मोह, स्मृति, धृति, व्रीड़ा (लज्जा), चपलता, हर्ष, आवेग, जड़ता, गर्व, विषाद, औत्सुक्य, निद्रा, अपस्मार, स्वप्न, विबोध, अमर्ष, अवहित्था, उग्रता, मति, व्याधि, उन्माद, मरण, त्रास, वितर्क। संचारी भाव पानी के बुलबुले की तरह उठता और शान्त होता रहता है। इसके विपरीत स्थायी भाव आदि से अन्त तक बना रहता है। जैसे— शकुन्तला के प्रति रति भाव के कारण शकुन्तला को देखकर दुष्यन्त के मन में मोह, हर्ष, आवेग आदि जो भाव उत्पन्न होंगे उन्हें संचारी भाव कहेंगे।

डॉ० राकेश कुमार
हिन्दी विभाग
शेरशाह महाविद्यालय, सासाराम, रोहतास